शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

लॉकडाउन– प्राकृतिक पर्यावरण हेतु एक वरदान, भारत के सन्दर्भ में

प्राप्तिः 16.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डॉ0 बी0पी0 सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
एस0 वी0 पी0जी0 कालेज, अलीगढ़
ईमेलः dushyantm84@gmail.com

सारांश

प्राकृतिक पर्यावरणा और मानव जीवन का आदिकाल से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। प्रकृति की साझेदारी में वायुमण्डल, जलमण्डल, और जैवमण्डल का एक निश्चित अनुपात रहा है। प्रकृति और जीवन एक दूसरे के पूरक है। मानव तथा अन्य प्राणियों की आवश्यकतायें प्रकृति से ही पूरी होती है। हमारे पूर्वज प्रकृति के महत्व को समझते थे, इसलिए हमारी प्राचीन शिक्षा–पद्धति प्राकृतिक पर्यावरण पर आधारित थी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लॉकडाउन मानव जीवन के लिए वरदान है। क्योंकि जिन पंच तत्वों से मानव को जीवन मिलता है वे हमें प्रकृति से ही प्राप्त होते है। वे पंचतत्व है– पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि और पवन। जीवन समाप्त होते ही ये पॉचों तत्व प्रकृति में ही विलीन हो जाते है। इस प्रकार मानव जीवन को चलाने में प्रकृति के महत्व को ध्यान में रखकर मनुष्य को प्रकृति के महत्व को ध्यान में रखकर मनुष्य को प्रकृति संरक्षण में अपना दायित्वपूर्ण कर्तव्य निभाना चाहिए।

पेड़–पौधे हमारे जीवन के रक्षक है। वे हमें प्राण–वायु प्रदान करते है तथा प्राणियों द्वारा निष्कासित कार्बनडाइआक्साइड का अवशोषण करते है। इससे प्रकृति का संतुलन चक्र सहज रूप से निरंतर चलता रहता है। लेकिन दुख की बात है कि कुछ स्वार्थी/तत्व अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उन पेड़–पौधों की बेरहमी से कटाई में जुटे है, जो हमारे पोषक है। इसके फलस्वरूप पर्यावरण संतुलन दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है, और मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है।

प्रस्तावना

मनुष्य प्रकृति की एक अनमोल एवं विलक्षण रचना है। मनुष्य सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और अधिक समझदार है क्योंकि वह अपने हित और परहित के बारे में सोच सकता है। परन्तु

बिडम्बना यह है कि स्वार्थी मनुष्य अपनी खुशहाली और अधिकाधिक सुख–सुविधाऐं पाने के लालच में प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने के उद्देश्य से नई–नई तरकीबे खोजने में लगा है। स्वार्थ में लिप्त मानव को यह नहीं मालूम कि उसके द्वारा प्रकृति के अत्यधिक दोहन से प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन जिस तेजी से बिगड़ता जा रहा है उसका खामियाजा अन्ततः मनुष्य को ही भुगतना पड़ रहा है। प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ कर वह अपने की पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है।

इसलिए प्रकृति के साथ सतत एवं उचित सामंजस्य बनाए रखने में ही मनुष्य की समझदारी की परीक्षा है।

भारत में जनसंख्या जैसे–जैसे बढ़ती जा रही है वैसे ही मनुष्य की आवश्यकताऐं भी अधिक बढ़ती जा रही है। खाद्यान की पूर्ति के लिए अधिक अन्न उत्पादन की जरूरत हो रही है। फलतः वन–भूमि को कृषि–भूमि में बदलने का सिलसिला जारी है और वन–क्षेत्र घटता जा रहा है। आबादी के बढ़ने से मनुष्य की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों को काट कर कल–कारखाने लगाए जा रहे हैं। इससे भी वन–क्षेत्र घटने लगा है। वन–क्षेत्र की कमी होने से वन्य पशु –पक्षी और वनस्पतियां प्रभावित हो रही है। और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने से मनुष्य को विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाऐं झेलनी पड़ रही है। कोराना–19 महामारी भूकम्प/अनावष्टि एवं अन्य आपदाओं के लिए मनुष्य ही उत्तरदायी है।

प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पेड़–पौधे, पशु–मानव सब मिलाकर पर्यावरण की रचना करते हैं। प्रकृति में इन सबकी मात्रा और रचना कुछ इस प्रकार से व्यवस्थित है, कि पृथ्वी पर एक संतुलनमय जीवन चलता रहे। विगत करोड़ों वर्षों से जल से पृथ्वी पर मनुष्य, पशु–पक्षी, और अन्य जीव और जीवाणु उपभोक्ता बनकर आये, तब से प्रकृति का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है।

सन् 1650 में विश्व की कुल जनसंख्या 54 करोड़ 50 लाख थी, जो अब सन् 1994 के प्रारम्भ में 5 अरब 86 करोड़ के आस–पास हो गई, वर्तमान समय में विश्व की जनसंख्या में 10 गुनी से भी अधिक वृद्धि हुई है। जिन देशों ने इस चेतावनी को समझा और उसके लिए कार्य योजना बनाई वे आज भी पर्यावरण के कई संकटों से प्रभावित नहीं है, जैसे उ0 अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, जर्मनी, नार्वे, स्वीडन आदि अनेक देश हैं।

प्राकृतिक पर्यावरण के बारे में चिन्तन बहुत पुरानी बात नहीं है। केवल पिछले 50 वर्षों में कुछ–कुछ ऐसी घटनाओं की जानकारी हुई है। जिससे अप्रत्याशित रूप से मानव और पशुओं की जाने गई हैं और इनसे ही इस दिशा में अनेक चर्चाऐं, विचार–विमर्श और सेमीनार हुई हैं।

भारत में पिछले वर्षों में अनेक योजनाऐं बनाई और कई प्रकार के प्रयास किये जिनसे परिवार नियोजन, वृक्षारोपण, आदि योजनाओं को पूर्व लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ। ऑकड़ों के अनुसार पिछले 100 वर्षों में भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या के 17.8% हो गई है। विश्व का

सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश चीन ने राष्ट्रीय लक्ष्य रखें और उन्होनें सख्ती से ठोस योजना के क्रियान्वयन से उन्हें प्राप्त किया।

लॉकडाउन–प्राकृतिक पर्यावरण हेतु वरदान

प्राकृतिक पर्यावरण मानव को ऐसे पर्यावरण में, जिसमें वह सुखी और मर्यादा पूर्ण जीवन जी सके, तथा जहां स्वतन्त्रता, समानता और रहन–सहन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो, जीने का मूलभूत अधिकार है और साथ ही उसका वर्तमान तथा भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित और सुधारें हुए पर्यावरण को उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण दायित्व है।

वर्तमान परिवेश में लॉकडाउन समय की जीवनदायनी मांग है। कोरोना–19 महामारी से मनुष्यों के जीवन को बचाना अति आवश्यक है। इसलिए भारत के प्रमुख राज्यों उ0 प्र0, महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात, तमिलनाडू, केरल, बिहार, पश्चिमी बंगाल, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, आदि राज्यों में लॉकडाउन की अति आवश्यकता है।

मनुष्य को प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण द्वारा कोविड–19 जैसी महामारी से बचाव किया जा सकता है। मनुष्य के अच्छे जीवन स्तर और कार्य करने के पर्यावरण की आवश्यकता हेतु तथा पृथ्वी पर ऐसी स्थिति बनाने के लिए जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो, आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति आवश्यक है।

कम विकास तथा प्राकृतिक प्रकोपों से होने वाली पर्यावरणीय क्षति को दूर करने के लिए विकासशील देशों को, उनके अपने प्रयासों के अतिरिक्त समुचित वित्तीय तथा तकनीकी सहायता यथासम्भव तथा आवश्यकतानुसार उपलब्ध होनी चाहिए।

मनुष्य अपने पर्यावरण का रचयिता तथा उसे ढ़ालने वाला दोनों ही है। जिससे उसे भौतिक स्थिरता तथा बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आत्मिक बुद्धि के अवसर मिलते है। मानव जाति की लम्बी और टेढ़ी–मेढ़ी विकास यात्रा में अब इस ग्रह (पृथ्वी) पर ऐसी स्थिति आ गई है, जब मनुष्य ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की तेज गति के साथ अपने पर्यावरण को अनेक प्रकार से और अपूर्व ढंग से बदलने की शक्ति अर्जित कर ली है।

पांच राज्यों के संक्रमित मरीजों की संख्या

कम संख्या	राज्य	संक्रमित मरीज, मई	वृद्धि प्रतिशत में
1–	महाराष्ट्र	5,93,150	0%
2–	कर्नाटक	5,71,026	27%
3–	केरल	4,20,076	125%
4–	उ0प्र0	2,25,271	4%
5–	राजस्थान	2,03,017	49%

प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा तथा सुधार ऐसे प्रमुख विषय है, जिनसे पूरे विश्व के लोगों के हित तथा उनके आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। यही पूरे विश्व के लोगों की

आवश्यक आकांक्षा और सभी सरकारों का कर्तव्य भी है।

मानव को ऐसे पर्यावरण में, जिसमें वह सुखी और मर्यादापूर्ण जीवन जी सके, तथा जहां स्वतंत्रता, समानता और रहन–सहन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो। जीने का मूलभूत अधिकार है और साथ ही उसका वर्तमान तथा भावी–पीढ़ी के लिए सुरक्षित और सुधारें हुए पर्यावरण को उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण दायित्व है।

मनुष्य पर वन्य प्राणियों एवं उनके आश्रय–स्थलों की सुरक्षा और विवेकपूर्ण व्यवस्था का उत्तरदायित्व है, जिन्हें अनेक कारणों से भारी खतरा हो गया है।

अतः आर्थिक विकास की योजना बनाते समय प्राकृतिक संरक्षण (वन्य–जीव सहित) को उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

मनुष्य की लालची प्रवृत्ति और बढ़ती हुई आवश्यकताओं के कारण घटते वन–क्षेत्र से वन्य जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ है। जहां पशु–पक्षियों का जीवन खतरे में पड़ रहा है, वही जनोपयोगी औषधीय जड़ी–बूटियों की कई प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं।

वर्तमान में लॉकडाउन से प्राकृतिक पर्यावरण काफी सुधार हुआ है। वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि में परिवर्तन आया है। अब नगरीय जीवन की सुख–सुविधाओं, विकास के साधनों की उपलब्धता और चमक–दमक ने अभावग्रस्त ग्रामवासियों को आर्कषित करना शुरू कर दिया है। इसके कारण वे नगरों की ओर भाग रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो नगरों की आबादी तेजी से बढ़ने लगेगी और गांव वीरान हो जायेगें। गांवों में भी नगरों जैसी सुख–सुविधाऐं और तरक्की के अवसर प्रदान कर ग्रामीणों की इस पलायन प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है।

जलप्रदूषण को रोकना और जल संग्रहण करना आज की ज्वलत समस्याऐं हैं। मानसून कमजोर होने पर मनुष्यों और जीव–जंतुओं की हालत दयनीय हो जाती है तथा वनस्पतियां सूखने लगती है। अतः गिरते हुए भू–जल स्तर को ऊंचा उठाने के नये–नये तरीके अपनाने की जरूरत है।

जैसे–जैसे औद्योगिक विकास हो रहा है, वैसे ही वायुप्रदूषण और जलप्रदूषण के साथ ध्वनिप्रदूषण भी विकास रूप धारण कर रहा है। चारों ओर शोरगुल से मानसिक तनाव बढ़ रहा है। मनोरंजन के साधन और प्राकृतिक पर्यावरण ही मानसिक प्रदूषण से मुक्ति दिला सकता है।

भारत एक विशाल देश है। जोकि विश्व के क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है, किन्तु जनसंख्या 17 प्रतिशत है, यहां की विभिन्न ऋतुऐं मनुष्य के स्वास्थ्य और सर्वतोमुखी विकास में सहायक है। यहां के विस्तृत भू–खण्ड में पहाड़, झीलें, नदियों, झरने, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां औषधीय जड़ी–बूटियां और मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले खनिज पदार्थ है।

यद्यपि यहां का पर्यावरण सभी प्राणियों को स्वस्थ्य और सुखी जीवन की सुविधाऐं प्रदान करने में सक्षम है। फिर भी उसका आवश्यकता से अधिक उसका दोहन करना प्राकृतिक–आपदाओं को आमंत्रित करना होगा।

आज भारत ही नहीं पूरा विश्व कोविड–19 महामारी भयावह स्थिति से गुजर रहा है। प्रतिदिन लगभग चार लाख संक्रमित मरीज मिल रहे है। देश में महामारी की पराकाष्ठा है।

भारत सरकार इसे रोकने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। इसके लिए कोविड टीका की डोज 45 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग तथा अब 18 से 44 वर्ष के लिए भी टीके की डोज लगना प्रारम्भ हो गया है। ताकि मनुष्यों में इम्यूनिटी को बढ़ाकर बचाव किया जा सके।

वृक्षारोपण कर ऑक्सीजन की मात्रा वायुमण्डल में बढ़ाई जा सके। वन–सम्पदा जीवन के लिए संजीवनी है। प्रकृति ने समस्त प्राणियों के लिए जो सुविधाऐं सहज रूप से सुलभ कराई है, उनसे पूरा–पूरा लाभ न उठाना मनुष्य की ना समझी है।

अतः प्रसन्नता की बात है कि हमारा शासन पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए करिबद्ध है। आज आवश्यकता है शासन एवं स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा जन–रूचि जाग्रत कर पर्यावरण के महत्व से जन–सामान्य को अवगत कराने और प्रचुर–प्रचार–प्रसार की तभी जनता की सक्रिय भागीदारी से पर्यावरण संतुलन बनाऐ रखने में सहायता मिल सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1– एम0के0 गोयल, *''अपना पर्यावरण* 1995''

2–एम0ए0 हक, '' *पर्यावरण पत्रिका* 2003''

3–सविन्द्र सिंह, *''पर्यावरण भूगोल* 2018''